तोता
एक इतालवी लोककथा

एक समय की बात है कि एक प्रचीन राज्य के एक गाँव में एक व्यापारी और उसकी सुंदर बेटी रहते थे.

गाँव के निकट एक ऊँचा पहाड़ था जिसकी चोटी पर राजा का महल था. राजा एक दुष्ट, वृद्ध व्यक्ति था और उस सुंदर लड़की से बहुत प्यार करता था. लड़की की एक झलक पाने के लिए वह प्राय: दूरदर्शक यंत्र से व्यापारी के घर की ओर देखता रहता था.

लेकिन निकट के राज्य का एक युवा राजकुमार भी उस लड़की को प्यार करता था. राजकुमार को संदेह था कि राजा के मन में कोई बुरी योजना थी. इसलिए युवती की निगरानी करने के लिए वह उस गाँव में रहने के लिए आ गया.

एक दिन राजकुमार को पता चला कि, बेटी को अकेले घर छोड़ कर, व्यापारी को अपना सामान बेचने के लिए दूर देश जाना था. उसे बहुत चिंता होने लगी, व्यापारी के जाने के बाद राजा क्या करेगा? राजकुमार ने बहुत सोचा और खूब सोचने के बाद उसने एक योजना बनाई.

वह दूर घने जंगल में एक जादूगरनी के पास गया.

“क्या तुम मुझे अपनी इच्छानुसार तोता बनना सीखा सकती हो?” उसने पूछा.

“अवश्य,” जादूगरनी ने कहा. और उसने राजकुमार को तोता बनना सीखा दिया.

राजकुमार ने जादू से अपने को तोता बना लिया और उड़ कर व्यापारी के घर के पास आ गया. जब लड़की ने खिड़की के बाहर, नाशपाती के पेड़ के ऊपर, उसे बैठे देखा तो उसने खिड़की खोल दी. तोता तुरंत कमरे के अंदर आ गया और अपनी बातों से लड़की का दिल बहलाने लगा.

वह जितनी कहानियाँ सुनाता, लड़की उतनी और कहानियाँ सुनने के लिए ही आतुर हो जाती. आखिरकार, तोते ने कहा, “अगर तुम वचन देती हो कि बीच में बाधा नहीं डालोगी तो मैं तुम्हें संसार की सबसे अनोखी कहानी सुनाऊँगा. लेकिन कहानी सुनाते समय तुम किसी भी कारणवश मुझे रोकोगी नहीं. अन्यथा मैं चला जाऊँगा और तुम कहानी का अंत कभी न जान पाओगी.”

उसी समय ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी. लड़की को ले आने के लिए दुष्ट राजा ने अपने सैनिक भेजे थे. लेकिन लड़की ने कहा कि वह इतनी व्यस्त थी कि किसी से भी नहीं मिल सकती थी, चाहे वह व्यक्ति कितना ही विशेष क्यों न हो. वह आराम से बैठ गई और तोते से कहानी सुनाने के लिए उसने कहा.

"बहुत अच्छा," तोते ने कहा. "लेकिन बीच में कोई बाधा न डालना."

एक समय की बात है कि एक राजा की एक बेटी थी जो उतनी ही सुंदर थी जितनी तुम हो-अरे, लगभग उतनी ही सुंदर. क्योंकि उसका कोई भाई या बहन नहीं थी, राजा ने कलाकारों और कारीगरों को आदेश दिया कि वह एक ऐसी गुड़िया बनायें जो राजकुमारी जैसी लगती हो.

कुछ महीनों बाद, एक अद्भुत कृति राजा के समक्ष प्रस्तुत की गई. यह एक गुड़िया थी जो बिलकुल राजकुमारी जैसी दिखाई दे रही थी. राजकुमारी यह शानदार उपहार पाकर बहुत प्रसन्न हुई. वह जहाँ भी जाती गुड़िया को अपने पास रखती थी.
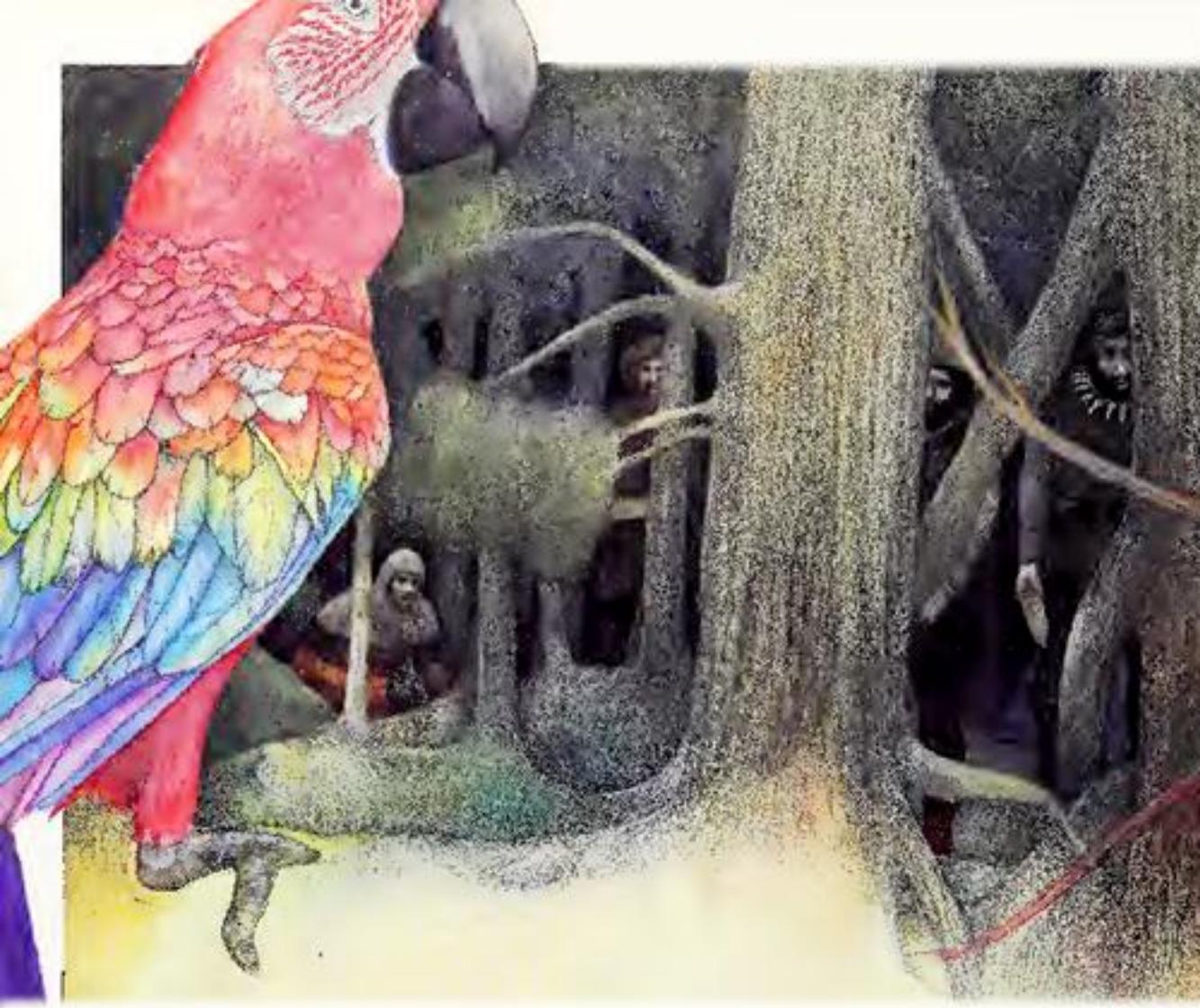
उस राज्य की सीमा के आगे एक बहुत ही घना जंगल था, और जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहाँ तक फैला हुआ था. इस अंधेरे जंगल में एक सरदार अपने डाकूओं के दल के साथ रहता था. लोग उसे शैतानों का राजा बुलाते थे.

लंबे समय से शैतानों का राजा सुंदर राजकुमारी का अपहरण करने की योजना बना रहा था. जब राजकुमारी के पिता को अपना महल छोड़ कर राज्य के एक दूर-दराज़ भाग में जाना पड़ा तो डाकूओं के सरदार को एक अवसर मिल गया.

खट, खट, खट.

“सुनाते रहो, सुनाते रहो,” लड़की ने तोते से कहा. “मैंने तुम से कहा था कि बीच में टोकना नहीं!” उसने राजा के सैनिकों से कहा. “कहानी बहुत रोचक हो गई है.”
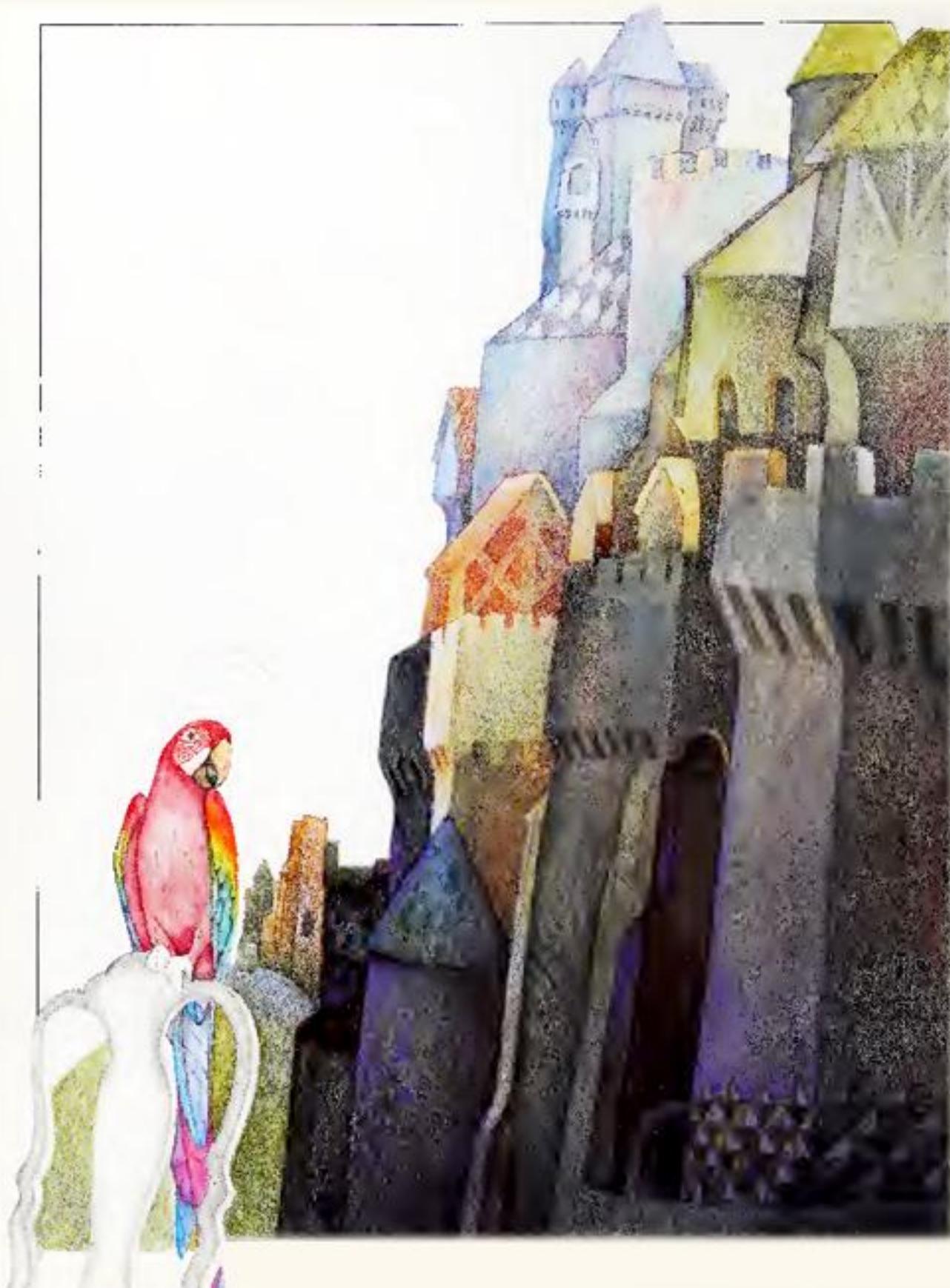
शैतानों के राजा ने अपने दो आदमियों से कहा कि राजकुमारी का, जो महल में अकेली थी, अपहरण कर के ले आयें. जब रात हुई तो उसके कमरे में घुसने के लिए वह दोनों महल की दीवार चढ़ने लगे.

उस समय राजकुमारी सोने के लिए तैयारी कर रही थी. उसने अपनी गुड़िया को एक कुर्सी पर रख दिया और स्वयं नहाने के लिए चली गई. दोनों बदमाश कमरे के अंदर आ गए. कमरे में प्रकाश बहुत धीमा था. उन्होंने गुड़िया को उठा लिया और रस्सी के सहारे तुरंत नीचे आ गए.

"बस इतनी ही कहानी है? उसके बाद क्या हुआ, मुझे बताओ," लड़की ने कहा.

तोते ने आगे की कहानी सुनाई.

डाकू सारी रात चलते रहे. लेकिन जब भोर हुई तो उन्होंने देखा कि वह तो एक गुड़िया ले आए थे, लड़की नहीं. वह निराश हो गए. अपने सरदार के क्रोध से डर कर उन्होंने गुड़िया को सड़क के किनारे फेंक दिया और भाग गए.

एक राजकुमार ने, जो बाद में उस रास्ते से गुज़र रहा था, वह सुंदर गुड़िया देखी. वह उसे उठा कर अपने महल में ले आया.
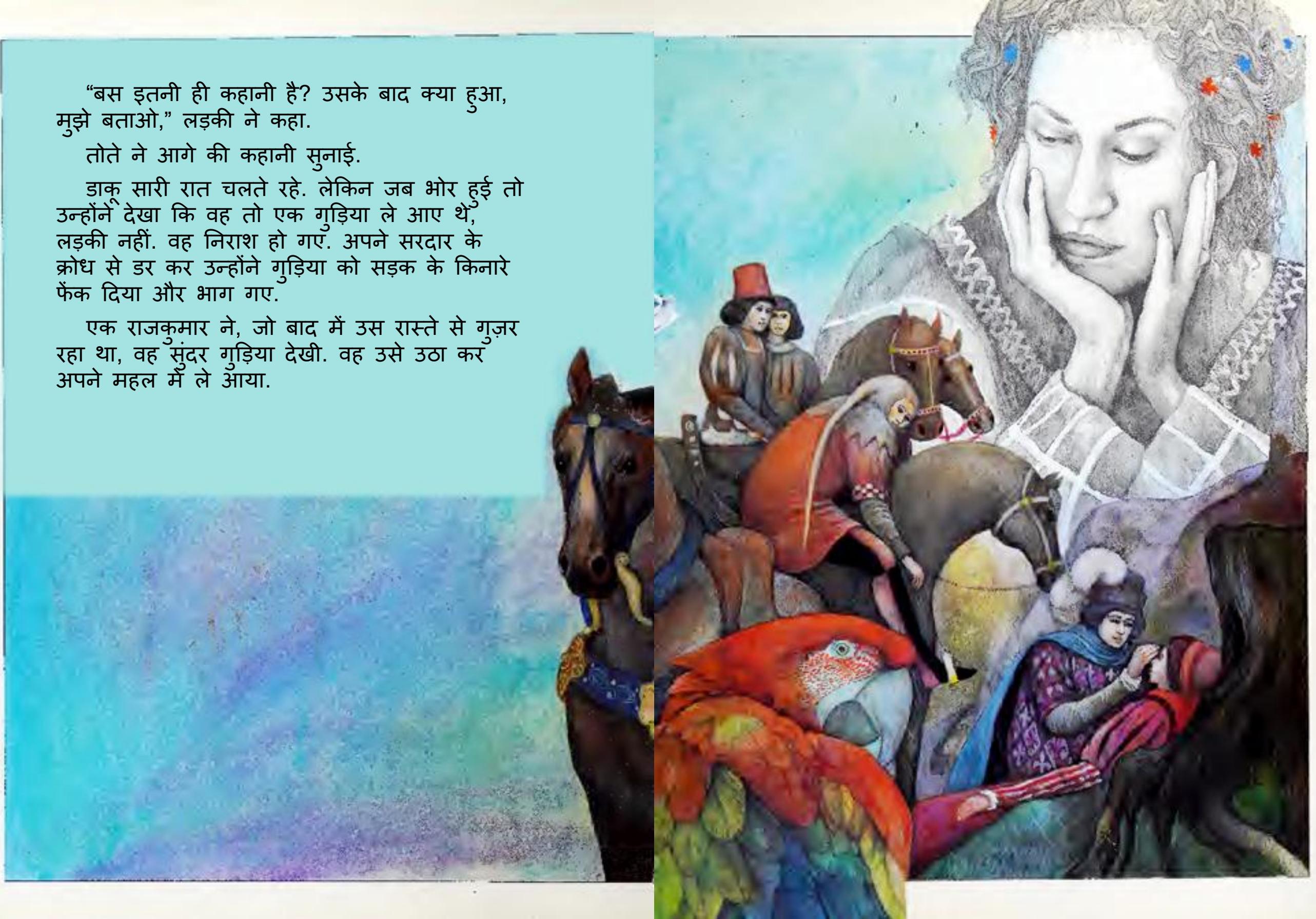
खट! खट! खट!

ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आई. लड़की ने सैनिकों को दुबारा भगा दिया.

"कृपया आगे कहानी सुनाओ," उसने तोते से कहा. "रूको नहीं, क्योंकि कहानी बहुत रोमांचक हो गई है."

"ठीक है," तोते ने कहा, "लेकिन अब कोई बाधा पड़ी तो मैं कहानी सुनाना बंद कर दूँगा."

जब राजकुमारी का पिता वापस आया तो वह समझ गया कि अपहरणकर्ता तो उसकी बेटी का अपहरण करना चाहते थे और उसने निश्चय किया कि अब वह बेटी को कभी अकेला न छोड़ेगा.

अगली बार जब उसे यात्रा पर जाना पड़ा तो वह बेटी को साथ ले गया. यात्रा लंबी और कठिन थी, इसलिए एक जगह वह रुक कर आराम करने लगे. उस जंगल की ज़मीन सुंदर फूलों से भरी हुई थी. उन सुगंधित और अद्भुत फूलों को देखकर राजकुमारी अपने को रोक न पाई, जब उसके पिता ऊँघ रहे थे वह फूल तोड़ने लगी. उसने निकट के कुछ फूल तोड़े, फिर थोड़ा दूर गई, फिर और दूर और इस तरह अपनी गाड़ी से वह बहुत दूर निकल आई.

आखिरकार जब राजकुमारी अपनी गाड़ी के पास लौट कर आई तो उसने देखा कि गाड़ी उलटी हुई थी. उसके पिता और सब सेवक गायब हो गए थे.

दुःख से भरी वह पिता की तलाश में निकल पड़ी. वह जंगल में कई दिन घूमती रही. खाने के लिए वह बेर, नट्स और जंगली मशरूम इकट्ठी कर लेती.

एक रात जब वह एक चट्टान के नीचे सोने लगी तो उसने कुछ आवाज़ें सूनी. कुछ दूरी पर उसने जलती हुई आग देखी. वह टटोलती हुई उस आग के निकट आई. जब वह बहुत निकट पहुँच गई तो उसने पाँच भयंकर......

धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! दरवाज़े से आवाज़ आई.

"ईश्वर के लिए," लड़की ने प्रार्थना की. "उनसे कहो कि चले जायें और मुझे आगे की कहानी सुनाओ."
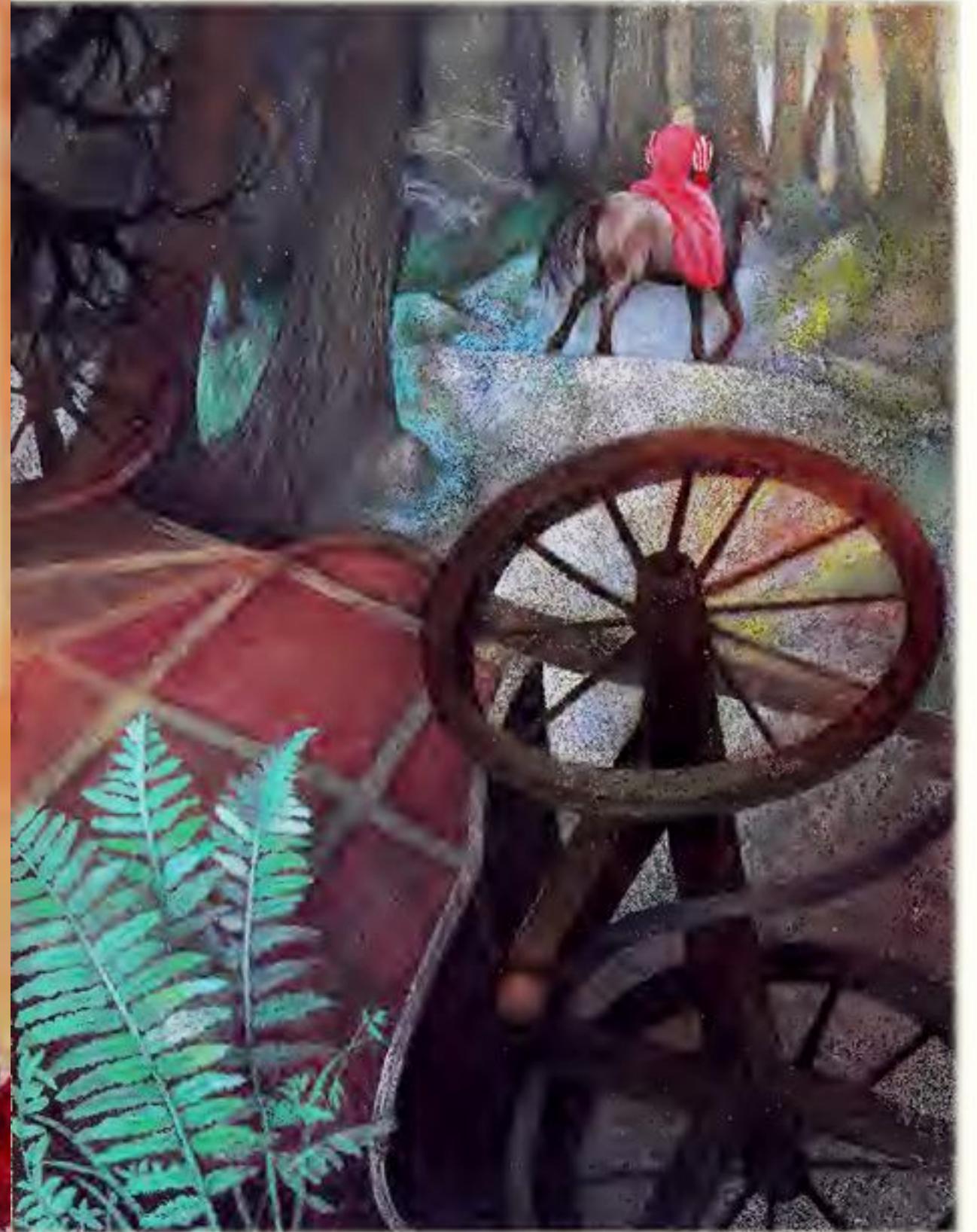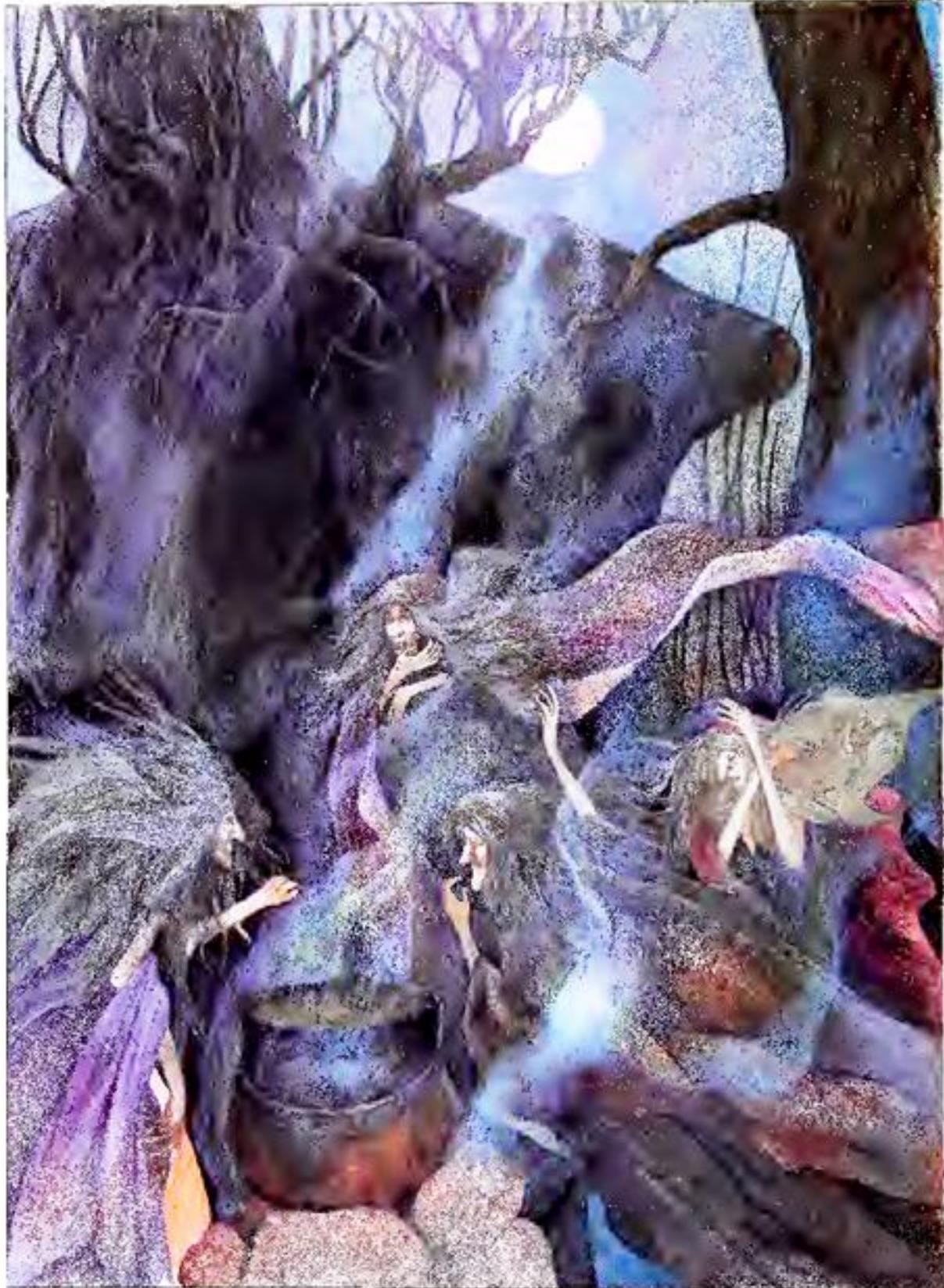
जो राजकुमारी ने देखा था वह थीं पाँच डरावनी डायनें जो लपलपाती आग पर कुछ भयानक चीज़ पका रही थीं. जब वह विशाल कौवों की तरह चीखतीं तो बरतन से साँप और मेंढक उछल कर बाहर आ जाते.

“मंत्र, मंत्र. राजकुमार को मारने के लिए मंत्र.”

“वह हमें कहाँ मिलेगा, बहनों?” एक डायन ने पूछा.

“एक गुड़िया के प्यार में विलाप करता हुआ, वह हमें अपने शयनकक्ष में मिला,” दूसरी डायन ने उत्तर दिया. “हम ने उसे उसके महल के नीचे एक तहखाने में कैद कर दिया है. सिर्फ हम जानते हैं कि उस तहखाने का रास्ता उसके बिस्तर के नीचे है.” और वह कीं-कीं हँसने लगीं.

राजकुमारी चुपके से वहाँ से चली गई. फिर सारी रात वह घोड़े पर भागती गई. सूर्योदय होने तक वह जंगल से बहुत दूर चली आई थी. दोपहर होते-होते वह एक विशाल नगर के द्वार तक पहुँच गई थी. नगर के हर घर की खिड़कियों में काले झंडे लहरा रहे थे.

"राजकुमार गायब हो गए है. हमें आशंका है कि उसकी मृत्यु हो गई है," जब वह ब्रैड लेने के लिए एक दुकान में गई तो बेकर की पत्नी ने उसे बताया.

जब राजकुमारी ने यह बात सुनी तो वह सीधे महल की ओर चल दी.

"मुझे भीतर जाने दो," उसने सिपाहियों से कहा. "मेरे पास राजकुमार के विषय में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी है."
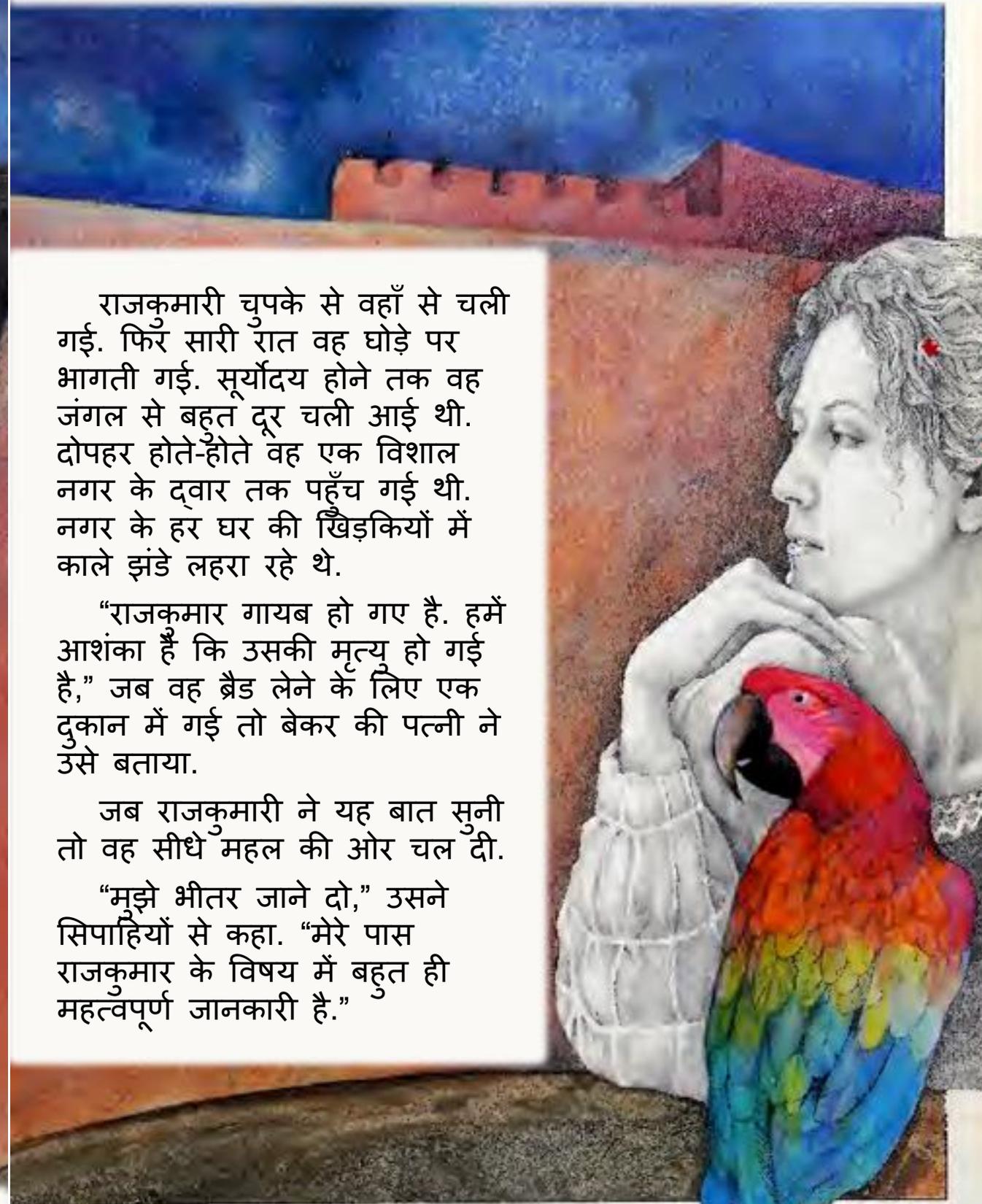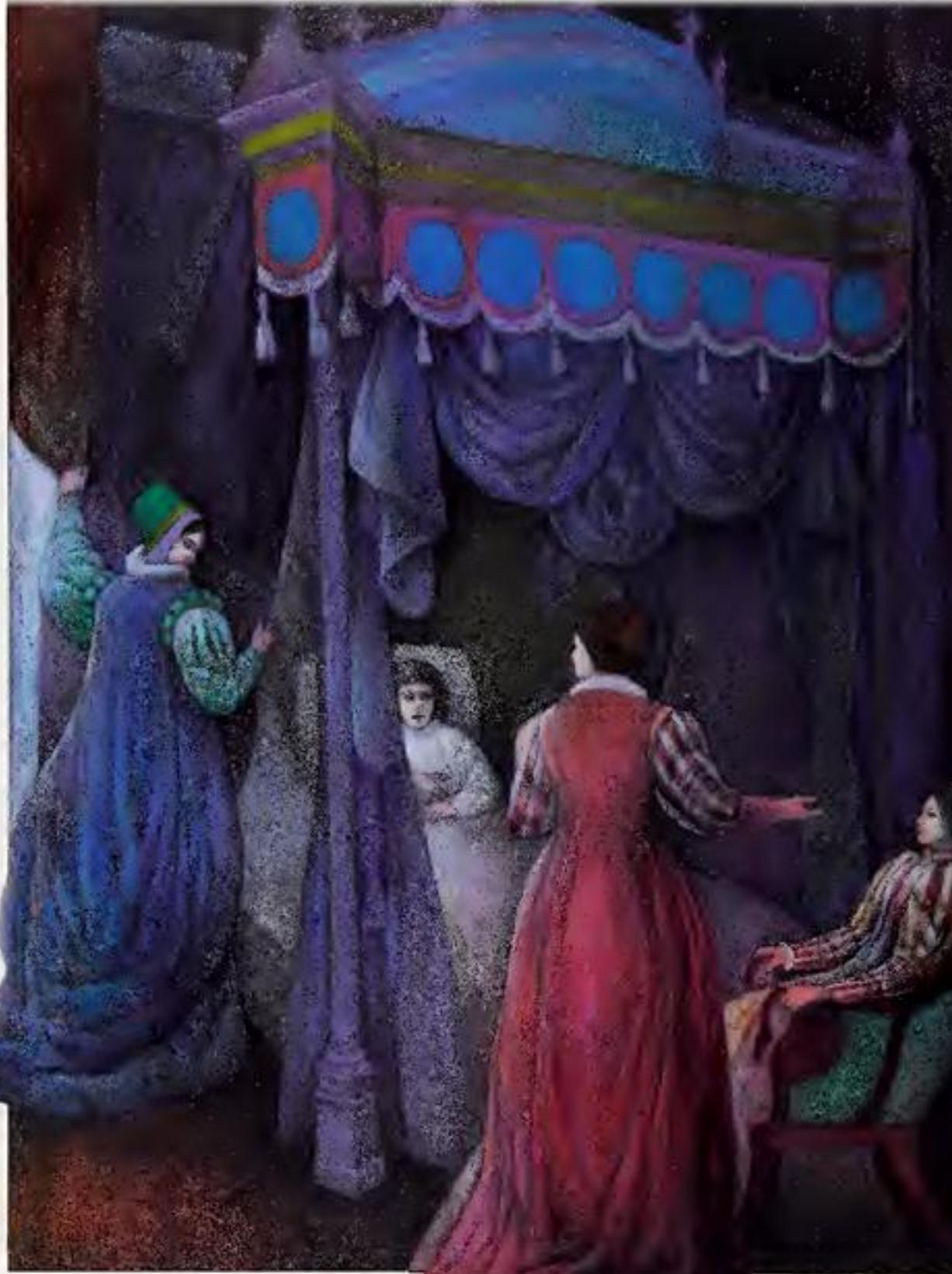
रानी और उसके सिपाही राजकुमार की खोज में दौड़ चले. राजकुमार वहीं था जहाँ उस लड़की ने बताया था. उन्होंने उसे मुक्त करा लिया, लेकिन राजकुमार को इस बात की कोई परवाह न थी. वह स्थिर बैठा बस गुड़िया को एकटक देख रहा था. रानी के कुछ कहने या करने का उस पर कोई प्रभाव न पड़ता था.

रानी ने निराश हो कर उस गुड़िया को ध्यान से देखा. उसे लगा कि गुड़िया का रूप उस सुंदर लड़की से बहुत मिलता-जुलता था, जिसने उन्हें बताया था कि राजकुमार कहाँ मिलेगा.

"दौड़ो और देखो कि क्या वह लड़की अभी भी महल के अंदर है," रानी ने आदेश दिया.

जैसे ही वह लड़की अपने पिता की तलाश में जाने वाली थी, सैनिकों ने उसे ढूँढ़ लिया. जब सैनिक उसे राजपरिवार के सामने लाये तो राजकुमार अचानक सचेत हो गया.

"तुम. मैं तुम्हें ही प्यार करता हूँ," उसने कहा. "क्या तुम मुझ से विवाह करोगी?"

"लेकिन मेरे पिता खो गये हैं. मुझे उन्हें ढूँढ़ना होगा," राजकुमारी ने दुःखी मन से कहा.

उसी समय. *खट! खटाक! धड़ाम!* दरवाज़े से आवाज़ आई.

कहानी का अंत जानने के लिए लड़की बहुत व्याकुल हो रही थी. लेकिन तोते की कल्पना-शक्ति अब उसका साथ न दे रही थी. उसे डर था कि लड़की का अपहरण करने से दुष्ट राजा को वह रोक न पायेगा.

खटाक! खटाक!! खटाक!!! दरवाज़े से कई लोगों और घोड़ों की आवाज़ आ रही थी.

"ओह," वह हकलाते हुए बोला, "ठीक है......"

रानी और राजकुमार ने निर्णय किया कि उसके पिता को ढूँढ़ने में वह राजकुमारी की सहायता करेंगे. और उन्होंने वैसा ही किया. फिर उनका विवाह हो गया और वह दोनों सदा प्रसन्नता से रहे और फिर.....
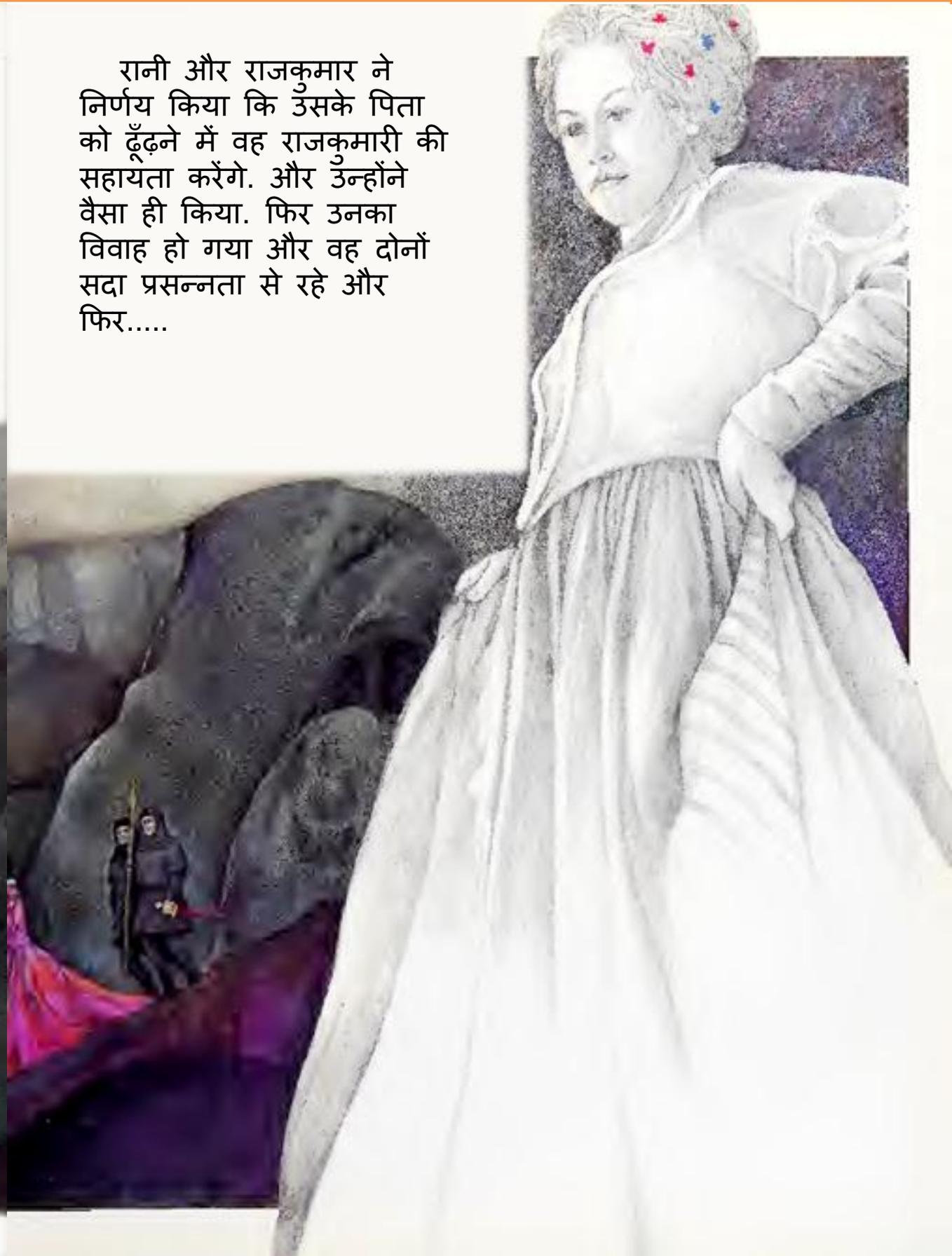
अचानक उन्होंने दरवाज़े पर किसी को पुकारते हुए सुना.

“मैं तुम्हारे पिता हूँ. मुझे अंदर क्यों नहीं आने दे रही?”

लड़की दरवाज़े की ओर दौड़ी. द्वार पर उसके पिता थे जो यात्रा से लौट आए थे.

“ओह, पिताजी,” वह चिल्लाई. “एक अनोखा तोता मुझे एक आश्चर्यजनक कहानी सुना रहा था. यह कहानी दिन-प्रतिदिन चलती रही. अगर मैं कहानी में बाधा डालती तो वह कहानी सुनाना बंद कर देता, इसलिए जब तक आप घर से बाहर रहे मैंने किसी के भी खटखटाने पर दरवाज़ा नहीं खोला. भीतर आइए और देखिये वह कितना निराला पक्षी है.”
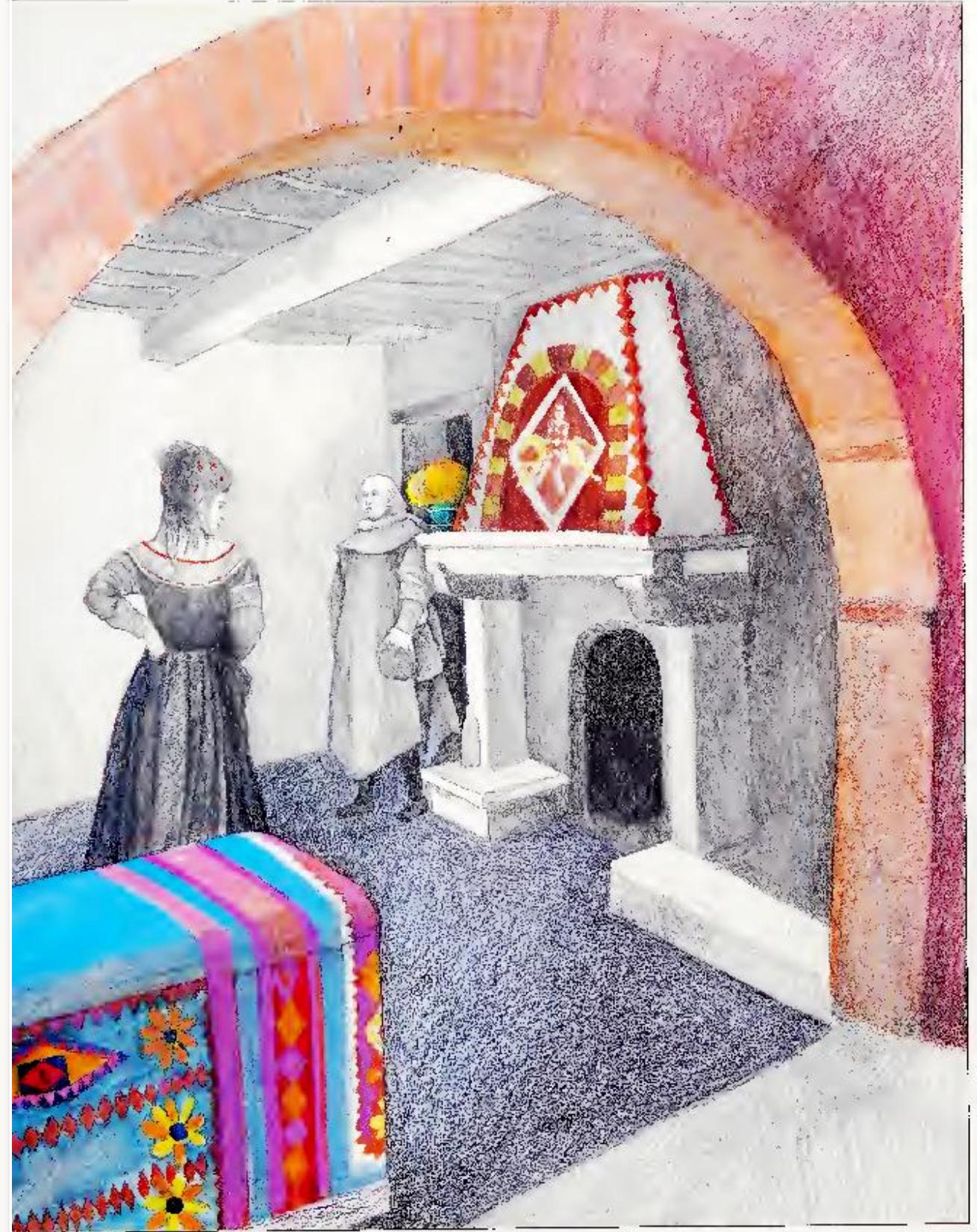
लेकिन कमरे में एक सजीला युवक खड़ा था. तोता गायब हो गया था.

"कृपया मुझे क्षमा करना," उसने लड़की से कहा. "दुष्ट राजा ने तुम्हारा अपहरण करने की योजना बना रखी थी." युवक ने बताया कि वह तो एक राजकुमार था. लड़की को उस विकराल राजा के चंगुल से बचाने के लिए ही वह एक तोता बना था.

"इसके अतिरिक्त," वह बोला, "मुझे आशा है कि तुम मुझ से विवाह करना चाहोगी."

"बेशक मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ," लड़की ने हँसते हुए कहा. "मैं ऐसे अनोखे कथा-वाचक को जो एक राजकुमार भी है कैसे मना कर सकती हूँ."

और इस तरह यह कहानी समाप्त हुई और दूसरी कहानी भी.

समाप्त